



पत्र-पुष्प



HAPPY NEW YEAR 2015

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(5-12-14)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए, दिल से मेरा बाबा, मीठा बाबा कह, बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के तीव्र पुरुषार्थ में तत्पर, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ आने वाले नये वर्ष (2015) की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां। नये उमंग, नये उत्साह के साथ सबको नये वर्ष की मुबारक हो, मुबारक हो।

मीठा बाबा कहे बच्चे, अब इस वर्ष को मुक्ति वर्ष, तपस्या वर्ष के रूप में मनाओ। वैसे भी जनवरी मास तो हम सब प्यारे ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त मास मनाते ही हैं। सभी बाबा के बच्चे साकार वा अव्यक्त की पालना में पलने वाले ब्रह्मा बाबा के कदम पर कदम रखते हुए तीव्र पुरुषार्थ की रेस भी करते हैं। अभी सेवाओं का बहुत अच्छा विस्तार होता जा रहा है। सेवाओं के साथ-साथ हम सबकी स्थितियां भी ऐसी अव्यक्त वा सम्पन्न बनें जिससे निर्विघ्न वायुमण्डल, निर्विघ्न सेवास्थान लाइट हाउस का काम करता रहे और हमारा मीठा प्यारा बाबा सबके दिलों में प्रत्यक्ष हो जाए।

तो आओ हम सब इसी लक्ष्य से आने वाले नये वर्ष को खूब उमंग-उत्साह के साथ "तपस्या वर्ष" के रूप में मनायें, जिससे एक एक बाबा का बच्चा साक्षात् बाप समान बन अपने वायब्रेशन से विश्व कल्याण की सेवा करने लग जाए।

मुझे तो सदा यही ध्यान रहता है कि यह जो श्वांस चल रहे हैं उसमें श्वांसों श्वांस एक बाबा की ही स्मृति बनी रहे, बाबा ने जो चार सब्जेक्ट सिखाये हैं उसमें हमें फुल मार्क्स लेने हैं। बाबा की साकार मुरलियों अनुसार अब हमारे में कोई भी कमी नहीं होनी चाहिए। अगर कोई कमी कमजोरी है तो बाबा को सच-सच बताने से बाबा करेन्ट देगा, अवगुणों को निकालने में मदद करेगा। परन्तु कईयों को अपने अवगुण देखने का टाइम नहीं है, दूसरों के अवगुण देखने, बोलने के लिए बहुत टाइम है इसलिए बाबा कहते बच्चे बुरा न देखो, बुरा न सुनो और जब बुरा सुनेंगे, सोचेंगे ही नहीं तो बुरा बोलेंगे कैसे?

बाबा के ज्ञान के आधार से योग अब ऐसा हो जो हर संकल्प सिद्ध होने वाले हों। उसमें बाबा की इतनी मदद हो, जो कभी संकल्प से भी किसी को दुःख न पहुँचे। मुझे न दुःख देना है, न दुःख लेना है। मानो किसी ने मेरी ग्लानि भी की तो कोई हर्जा नहीं, मेरा ध्यान खिचवाया, वो मेरा फ्रैण्ड है, दुश्मन नहीं। एकदम व्यर्थ संकल्प किसी घड़ी भी क्रियेट न हो। जब ऐसी स्थिति बनती है तो भगवान हमको याद करता है, दुआयें देता है।

साकार में तो बाबा ने हम सबके लिए इतना सब किया पर अव्यक्त हो करके भी कितना वन्डरफुल पार्ट बजा रहा है। देखो 20-25 हजार की सभा, 4-5 घण्टे तक कैसे एकाग्र होकर बैठी रहती है। कोई हिलता भी नहीं, वन्डर है। अब हम सबकी भावना है कि ईश्वर में जो गुण हैं वो सब हमारे में आ जायें। सभी अच्छे हैं, किसी में भी कोई साधारणता न हो। जैसे ईश्वर में दया कृपा बहुत है, सबके प्रति यही भावना कि मेरे सब बच्चे बाप समान दुःख हर्ता, शान्ति दाता बन जायें। बोलो, आप सबके मन में भी यही भावना रहती है ना!

बाकी मधुबन में तो इस समय बाप और बच्चों के मिलन की बहुत अच्छी रिमझिम चल रही है। सभी अनेक वरदानों के साथ खुशियों से अपनी झोली भरकर जाते हैं। हमें भी बाबा शक्ति देकर चला रहा है। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति डाल इसे सफल करो

- 1) सम्पूर्ण हक लेने के लिए सम्पूर्ण आहुति भी देनी होती है। कोई भी यज्ञ रचा जाता है तो वह सम्पूर्ण सफल तब माना जाता है जब सम्पूर्ण आहुति डाली जाती है। अगर आहुति कम होगी तो यज्ञ सफल नहीं हो सकता, इसमें जितना और उतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता इसलिए जो भी कुछ आहुति में देना है वह सम्पूर्ण देना है और फिर सम्पूर्ण लेना है।
- 2) जैसे यज्ञ रचते हैं तो समाप्ति के समय बचा हुआ सब कुछ आहुति में डाल देते हैं। इस रीति जो कर्तव्य किया और जो परिणाम निकला वह बाप को समर्पण, स्वाहा कर दिया फिर कोई संकल्प नहीं। निमित्त बन कार्य किया और जब कार्य समाप्त हुआ तो स्वाहा किया। जैसे आग में चीज़ डाली जाती है तो फिर नाम निशान नहीं रहता वैसे हर चीज़ की समाप्ति में सम्पूर्ण स्वाहा करना है। फिर आपकी जिम्मेवारी नहीं, जिसके अर्पण हुए फिर जिम्मेवार वह हो जाते हैं।
- 3) यज्ञ में सर्व कमजोरियों की आहुति डाल दी है वा अभी रह गई है? जबकि आहुति डाल देते हैं तो अन्त में क्या कहते हैं? स्वाहा। जो स्वाहा हो चुके वह बीती हुई बातों को स्वप्न में भी नहीं देख सकते। ऐसे स्वाहा हुए हो?
- 4) जैसे कोई यज्ञ रचते हैं तो बीच-बीच में आहुति तो डालते ही रहते हैं लेकिन अन्त में सभी मिल कर सम्पूर्ण आहुति डालते हैं। ऐसे आप सभी मिलकर अपनी सर्व कमजोरियों को स्वाहा कर सकते हो? जब तक सभी मिल करके सम्पूर्ण आहुति नहीं डालेंगे तो सारे विश्व के वायुमण्डल वा सर्व आत्माओं की वृत्तियों व वायुब्रेशन को परिवर्तन में कैसे लायेंगे और जो आप सभी ने जिम्मेवारी ली है विश्व परिवर्तन की वा विश्व नव-निर्माण की, वह कैसे होगी? तो अपनी जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए वा अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिए सम्पूर्ण आहुति डालनी पड़ेगी।
- 5) मधुवन को महायज्ञ कहते हैं, तो महायज्ञ में आना अर्थात् महा आहुति डालना। साधारण आहुति नहीं। अनेक आत्माओं के लगन के अग्नि की सामूहिक आहुति डाली है? यहाँ से जाते हो, डाल कर जाते हो वा वापिस ले लेते हो वा सोचते हो कि किस प्रकार के तिल व जौ डालें?
- 6) सम्पूर्ण समर्पण हुए हो वा वापिस ले जाते हो? आहुति सम्पूर्ण समर्पण हो जाती है वा रह जाती है? क्या ऐसा तो नहीं सोचते कि यह पुरानी दुनिया में काम आयेगी? ऐसा होता है, कमजोर आदमी हाथ खींच लेते हैं। अगर आहुति डालने वाले कमजोर हों तो सेक

(गर्मी) होने के कारण, आधी आहुति बाहर, आधी अन्दर रह जाती है। यहाँ भी सोचते हैं कि करें या न करें? होगा या नहीं होगा; कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे? तो बुद्धि रूपी हाथ आगे-पीछे करते रहते इसलिए सम्पूर्ण स्वाहा नहीं होते, किनारा रह जाता है, बिखर जाता है। जब सम्पूर्ण स्वाहा नहीं तो सम्पूर्ण सफल नहीं होते।

7) इस महायज्ञ में पुरानी दुनिया की आहुति पड़ने के बाद ही यज्ञ समाप्त होना है। तो पहले अपने आपसे पूछो-पुरानी दुनिया की आहुति के पहले निमित्त बने हुए ब्राह्मणों ने अपने पुराने व्यर्थ संकल्प वा विकल्प, जिसको भी संकल्पों की सृष्टि कहा जाता है, इन पुराने संकल्पों की सृष्टि को, पुराने स्वभाव-संस्कार रूपी सृष्टि को महायज्ञ में स्वाहा किया है? अगर अपने हृद की सृष्टि को स्वाहा नहीं किया वा अपने पास रही सामग्री की आहुति नहीं डाली तो बेहद की पुरानी सृष्टि की आहुति कैसे पड़ेगी?

8) जैसे आत्म-ज्ञानी आत्मा का परमात्मा में समा जाना ही अन्तिम सम्पूर्ण स्थिति मानते हैं। इस अन्तिम आहुति का स्वरूप है-मैं-पन समाप्त हो, बाबा! बाबा! बोल मुख से व मन से निकले अर्थात् बाप में समा जाए, समा जाना अर्थात् समान बन जाना। इसको कहा जाता है अन्तिम आहुति, संकल्प, स्वप्न में भी देह-भान का मैं-पन न हो। अनादि आत्मिक स्वरूप की स्मृति हो; बाबा-बाबा अनहद शब्द हो। आदि ब्राह्मण स्वरूप में धर्म और कर्म की धारणा हो, इसको कहा जाता है सच्चे ब्राह्मण।

9) सच्चे ब्राह्मण ही यज्ञ की समाप्ति के निमित्त बनते हैं। यज्ञ रचने वाले तो बने, अब समाप्ति के भी निमित्त बनो अर्थात् अपनी अन्तिम आहुति डालो। तो बेहद की पुरानी दुनिया की आहुति भी पड़ ही जायेगी। सम्पूर्ण बनने का यही सहज साधन है। सम्पूर्ण आहुति देना-इसको ही सम्पूर्ण स्वाहा कहा जाता है। अन्तिम आहुति जब स्वयं डालेंगे तब दूसरों से डलवा सकेंगे।

10) यज्ञ का प्रसाद अन्तिम आहुति होती है। यज्ञ की रचना साकार सृष्टि में साकार द्वारा हुई - ब्रह्मा ने अपना पार्ट बजाकर ब्राह्मणों को यज्ञ की जिम्मेवारी दी, अब यज्ञ की विशेष प्रसादी बापदादा लेंगे। यह प्रसाद देना अर्थात् विश्व परिवर्तन होना। सेवा के साथ-साथ अब ऐसा संकल्प करो कि परिचय के साथ बाप की झलक देखने वा अनुभव करने का प्रसाद भी लेवें।

11) ब्रह्मा ने ब्राह्मणों के साथ यज्ञ रचा तो स्थापना हुई अब समाप्ति में भी यज्ञ में सर्व ब्राह्मणों के संगठित रूप में "स्वाहा" के दृढ़ संकल्प की आहुति पड़े तब यज्ञ समाप्त हो अर्थात् विश्व-

परिवर्तन का कार्य समाप्त हो। इसके लिए एक ही शब्द का पुरुषार्थ है “स्वाहा” जब स्वाहा हो जाता है तो हाय-हाय के बजाए अहा हो जाती है। तो अपने से पूछो सर्व बातों में स्वाहा किया है? स्वाहा करना आता है।

12) जब संगठित रूप में पुराने संस्कार, स्वभाव व पुरानी चलन के तिल व जौं स्वाहा करेंगे तब यज्ञ की समाप्ति होगी। तिल और जौं यज्ञ में डालते हैं ना। जब यज्ञ की समाप्ति होती है तो सब इकट्ठे स्वाहा कर देते हैं, तब ही यज्ञ सफल होता है। अगर एक भी आहुति नहीं पड़ी तो अच्छा नहीं मानते हैं। तो संगठित रूप में स्वाहा करो।

13) अगर किसी के कुछ पुराने संस्कार रह भी गये हैं, वह स्वयं स्वाहा नहीं कर सकते तो संगठित रूप में सहयोगी बनो। कैसे? अगर करने वाला कर रहा है या बोल रहा है तो सुनने वाले, देखने वाले, देखें नहीं, सुने नहीं, तो उसका करना भी समाप्त हो जायेगा। कोई गीत गाने वाला गा रहा है, डान्स वाला डान्स कर रहा है, देखने वाला, सुनने वाला कोई न हो तो स्वतः ही समाप्त

हो जायेगा। ऐसा सहयोग दो। इसको कहा जाता है “स्वाहा”।

14) सेन्स और इसेन्स दोनों का बैलेन्स रखो तो हर सेकेण्ड स्वाहा होते रहेंगे। संकल्प भी सेवा प्रति “स्वाहा” बोल भी विश्व-कल्याण प्रति “स्वाहा” हर कर्म भी विश्व परिवर्तन प्रति स्वाहा। तो अपनापन अर्थात् पुरानापन स्वाहा हो जायेगा। बाकी रह जायेगा – बाप और सेवा। अपने देह की स्मृति सहित-स्वाहा, तब एक सेकेण्ड में वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकेंगे।

15) अविनाशी ज्ञान यज्ञ को कुण्ड भी कहा जाता है, इस कुण्ड को भरना अर्थात् सब कुछ स्वाहा करना। यह अविनाशी यज्ञ है। कहते हैं शिवबाबा का भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। दूर तब होंगे जबकि नई दुनिया में जायेंगे।

16) मधुबन यज्ञ भूमि में आये हो, यज्ञ में अग्नि होती है। अग्नि में कोई भी चीज़ पड़ने से बहुत जल्दी मोल्ड हो जाती है। जैसा स्वरूप बनाना चाहो वैसा बना सकते हो। तो इस यज्ञ में अपने आप को जैसा बनाने चाहो सहज ही बना सकते हो।

शिवबाबा याद है ?

23-3-13

ओम् शान्ति

मधुबन

“उमंग-उत्साह के बिना यह जीवन नीरस है, इसलिए सदा उमंग-उत्साह में रहना है तो न कभी अपसेट होना, न अबसेन्ट (गैरहाज़िर) होना”

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति। आगे सिर्फ ओम् कहते थे, अभी ओम् के साथ शान्ति बोलते हैं, तो शान्ति पहले फिर ओम् निकलता है। साइंस के साधन सारे विश्व को अच्छी सेवा दे रहे हैं, यह तो काम हो रहा है। साइंस है प्रकृति का साधन लेकिन वो भी तमोप्रधान बन चुकी है, हम अभी उसको साइलेंस से सतोप्रधान बना रहे हैं। यह साइंस के साधन सौ साल पहले नहीं थे, अभी तो जलवा देख रहे हैं, प्लेन में उड़ रहे हैं। पहले प्लेन नहीं था। पुराने जमाने में हम भी कराची से स्टीम्बर में आये, कोई ख्याल भी नहीं... कि प्लेन में भी कोई जा सकते हैं। अभी बाबा हमारी बुद्धि को प्लेन बना रहा है।

सहयोग देना, सहयोग लेना सहजयोग है। ऐसे नहीं लगे हम सहयोग दे रहे हैं, सहयोगी रहना शोभता है और अच्छा लगता है। और कहीं से सहयोग मिलता है तो दिल से थैंक्स निकलता है।

अन्दर में शान्ति है तो खुशी में चमक रहे हैं, जरा भी अशान्ति नहीं है, तो ऐसी शान्ति की शक्ति खुशमिजाज़ बना देती है। खुशी खुराक भी है तो ख़ज़ाना भी है। खुद को खुश रखने के लिए औरों को खुश करने के लिए मनुष्यों को खुशी के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। सारी जीवन में मैं खुश रहूँ और

भी खुश रहे इसमें बहुत मेहनत है। खुश रहना माना अन्तर्मुखी रहना। जो कभी खुश नहीं होते उसका कारण क्या है? बाह्यमुखता। उसको बाह्यमुखता एकदम अच्छी नहीं लगती है। बाह्यमुखता से कर्मेन्द्रियाँ चंचल हो जाती हैं। कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं तो शीतल है, शान्त है। तो अन्तर्मुखता से मन-बुद्धि को जीतने में खुशी है, विकर्माजीत बनने में खुशी है। कई कहते कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा बोला तो क्या हुआ? यह जो हमारी आदत है, ज्यादा सोचने की, बोलने की ... जैसे यह करना है, यह करना है... इससे टेन्शन हो जाता है। तो फिर कोई भी पुरुषार्थ करने में मेहनत अनुभव होती है इसलिए सच्चाई से अन्दर चित्त को साफ रखने से खुशी होती है।

तो कोई डिफेक्ट रह न जाये, उसके लिए गहराई से अपनी चेकिंग करके समय रहते चेंज कर लेवें, नहीं तो वो बाबा के दिल में नहीं बैठ सकेंगे। बाबा ने बहुत बड़ी दिल रखी है, कुछ भी चाहिए तो बाबा के दिल में चले जाओ। दिलाराम बाबा की दिल कैसी है? बाबा के सामने तो लाखों, करोड़ों बातें हैं दुनिया भर की, फिर भी देखो समा लेता है। बाबा जैसी दिल बनानी हो तो समाने की, समेटने की शक्ति से कोई भी बात की डिटेल में

जाओ ही नहीं। समेटने और समाने की शक्ति से सदा सन्तुष्ट रहने का वरदान बाबा से ले लो। जब से बाबा की बनी हूँ, मुझे तो यह वरदान प्राप्त है। बाबा ने कहा सदा शब्द सदा याद रखो, यह बात साकार में भी कहता था। बड़े जो कहते हैं वो करो, तो हाथ से ऐसे आशीर्वाद मिलती है परन्तु जो अच्छा बन जाते हैं उनको दिल से दुआ मिलती है, मांगने से नहीं। वह दुआओं की ताकत चला रही है।

ले लो दुआयें माँ बाप की, तो सारे पापों की गठरी उतरे, फिर बाबा के प्यार की शक्ति से श्रेष्ठ कर्म करने का उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होता है। कई भाई बहनें कहते हैं कि पहले उमंग-उत्साह था, अभी नहीं है, कोई भी कारण से उमंग-उत्साह कम हो गया तो क्या हाल होगा? जो दुआओं से पाप खत्म हुए थे, वो फिर से चढ़ जायेंगे इसलिए वह लिंक चाहिए पास्ट को पास्ट करने की। फिर से अगर पास्ट का थोड़ा निकल आया तो प्रेजेन्ट में भारीपन होगा। बाबा की दुआयें भारीपन को खत्म कर देती हैं। बाबा मेरा कम्पैनिनियन है, यह फीलिंग सदा होती रहेगी तो खालीपन वा अकेलापन फील नहीं करेंगे। कोई भी ऐसी घड़ी न आ जाये जो लगे कि मेरा कोई साथ नहीं दे रहा है, मेरे पास यह नहीं है, उनके पास है, यह थोड़ा भी संकल्प आया तो निश्चयबुद्धि से जो

विजयंती बनने की लिंक चल रही थी वो टूट जाती है। प्लीज़, कभी भी कोई भी कारण से उमंग-उत्साह कम न हो।

एक तो भगवान का साथ है, दूसरा सेवा का भाग्य है। भगवान के साथ के बिगर सेवा नहीं है। सेवा के फल ने बहुत सुख दिया है। हमने इतनी सेवा की है, बाबा ने अनेकों से सेवा कराई है, बूँद बूँद से तलाव हो गया है। तो अभिमान भी न आये, कभी मैने की है, निराशा भी न आये कि मेरी सेवा का कदर नहीं है... ऐसे ऐसे शब्द अपने आपमें पैदा करके निराश हो जाते हैं। निराशाई बड़ी नुकसानकारक है। जो वरदान, दुआयें मिल रही थी उसके बदले अपने आपको आपेही श्रापित करते हैं और उमंग-उत्साह के बिगर जीवन को नीरस बना देते हैं। पंछियों को साक्षी हो करके देखो, कहाँ भी सेकेण्ड में बैठेंगे फिर सेकेण्ड में उड़ जायेंगे। थोड़ा बैठे फिर उड़े। तो उड़ती कला बाबा ने दी है सम्पन्न बनने के लिए, तभी 16 कला बनेंगे। हमेशा उमंग-उत्साह में रहना हो तो कभी अपसेट न हो जाओ और ना ही कभी अबसेट (गैरहाज़िर) रहो क्योंकि सदैव बाबा के सामने, क्लास में, बड़ों के सम्मुख हाज़िर रहना सेवा भी है, तो स्व-उन्नति भी है। थोड़ा-सा प्रेजेन्ट में प्रेजेन्ट नहीं होंगे, यहाँ वहाँ बुद्धियोग गया तो मुस्कान कम हो जायेगी।

दूसरा क्लास

“फरिश्ता बनना है तो जरा भी लगाव झुकाव प्रभाव में आने की आदत न हो, विकर्माजीत वन कर्मातीत बनो तब फरिश्ता वनेंगे”

(दादी जानकी)

कल बाबा ने कहा भगवान और भाग्य। भगवान मेरा बाप है, भाग्य है याद और सेवा में। भगवान कहो तो बुद्धि ऊपर जाती है, हम भी ऊपर चले जाते हैं क्योंकि रास्ता देख लिया है ना, परमधाम का रहने वाला बाप है। वो कहते हैं जो मेरा घर है तेरा भी वही घर है। बाप सामने आया है तो घर से और अभी जाना है तो घर को याद करो। बाबा आया है घर ले जाने के लिए तो इतनी समझ से बाबा को याद करना है। फिर बाबा कहता है “स्वदर्शन चक्रधारी भव”। सारे चक्र का ज्ञान बाबा ऐसा देता है जो बुद्धि में फिट हो गया है। मैं आत्मा, संगम पर खड़ी हूँ, झाड़ के नीचे तपस्या कर रही हूँ, तो बाप और घर याद आता है। स्वदर्शन चक्रधारी के बाद फिर विश्व सेवाधारी हैं, उसके लिए त्याग, तपस्या, सेवा... प्रैक्टिकल विश्व-सेवाधारी उसको कहा जायेगा।

स्वयं, समय, बाप तीनों एक्यूरेट, इकट्ठे इकट्ठे हैं। बाबा, समय और मैं..... इससे विकर्म विनाश हुए, हिसाब किताब चुकतू हुआ, कर्म करते हुए भी कर्मयोगी बने। कर्मातीत ऐसे नहीं बनेंगे, कर्मातीत माना जरा भी हमारे से गलती नहीं हो सकती। इतनी

याद पॉवरफुल हो जो जरा-सा तिनका भी कोई देहधारी से लगाव की पुरानी आदत न रहे। अभी मरने की घड़ियां आयी हैं तो भी लगाव झुकाव की आदत छूटती नहीं है। अच्छा प्रभाव है तो यह अच्छा है कहके महिमा करेंगे, उस पर थोड़ा रहम भी जरूर आयेगा।

रूहानियत में रहमदिल हो, रहमदिल गुण है, विशेषता है, विश्व-सेवाधारी हैं, यह बड़ा डीप है। अपने आपको अच्छी तरह से देखो, जानो, मैं जानती हूँ, समझती हूँ.... परन्तु बाबा कहते हैं यह कब-कब नहीं बोलो। पहले हमें विकर्माजीत, कर्मातीत फिर सम्पूर्ण फरिश्ता बनना है। ऑटोमेटिक विकर्माजीत होने से कर्मातीत... फिर सर्वगुण सम्पन्न, कोई भी गुण की कमी न हो। धैर्यता, गम्भीरता की कमी नहीं हो। कभी भी ऐसा शब्द फीलिंग वाला न निकले। किसके लिए प्रभाव, किसी के लिए घृणा... नाम लेते ही ऐसे शक्ल हो जाती है तो वो फरिश्ता नहीं बन सकता है। गैरटी है, वहाँ नहीं पहुँच सकेंगे।

मधुबन में आना बहुत वैल्युबुल है। यहाँ सब कुछ भूल एक

बाप की याद में रहो, इसके लिए सदा तीसरी आँख खुली रहे। बाप समान स्थिति बनाने की धुन लगी रहे। सिर्फ प्वाइन्ट सुनी सुनाई, रिपीट वा रिवाइज करने के साथ-साथ उस पर रिहर्सल करो। फाईनल स्टेज बनाने के लिए एक्ट बड़ी अच्छी हो, उसके लिए बहुत रिहर्सल करते हैं। अब फाईनल पेपर आने वाला है, बाबा पहले से कभी नहीं बतायेगा।

बेहद का बाबा, बेहद की नॉलेज, बेहद का वर्सा, एक बेहद शब्द में भी बेहद की नॉलेज समाई हुई है। बाबा ने मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा बेहद का दिया है। मुझे क्या करने का है? जो करना है अभी करना है। हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। तो

यह भी एक सूक्ष्म नशा इस तरह का हो। खुशी और नशे में फर्क है। यह अच्छा कर रहे हैं, यह नहीं अच्छा कर रहे हैं, तुम्हारा क्या जाता है? तू अपनी कर। जैसे बाबा सबको अपना बनाता है, प्यार से सबको समझाता है, इतनी बातें सुना करके फिर न्यारा बन जाता है क्योंकि बाबा को न्यारा रह करके प्यारा बनना नेचुरल हो गया है। सबको गति सद्गति देने वाले को हम जानते हैं वो कौन है, कैसा है? ड्रामा अनुसार फिर भी हम देखते हैं बाबा हमारे ऊपर कितनी दया दुआ करता है। दया है बच्चे टाइम वेस्ट न करें इसलिए दुआ दे करके कराता है, तो उसका फायदा ले लेवें।

तीसरा क्लास

“16 कला सम्पूर्ण बनना है तो सबके गुण देखने की कला सीख लो”

(दादी जानकी)

संगम का यह टाइम कहता है, कहाँ भी लगाव न हो, केयरफुल रहो, थोड़ा टाइम है इसलिए केयरलेस नहीं रहो। कारण कोई भी नहीं होते, कारण बनाये जाते हैं। दिल सच्ची नहीं है तो अनेक कारण बनाकर बात को छिपा लेते हैं, कहेंगे दादी बहुत बिजी है, दादी के पास टाइम नहीं है, इसमें भी दिल बड़ी और खुली दिल, सच्ची दिल चाहिए। कभी बैठकर अपने आपको प्यार करो। बाबा तो प्यार करता है, लेकिन खुद को प्यार करो फिर आपस में एक दो को प्यार करो, यह प्रैक्टिस जरूरी है। कोई कैसा भी है उसकी विशेषता को देख जान उसे प्यार करो। बाबा का तो है। भाग्यवान है। जो सामने आये, रूहानियत की पर्सनैलिटी में रहना, यह गुप्त और सूक्ष्म पुरुषार्थ है। मैंने ब्रह्माबाबा को, अपने पूर्वजों को देखा है। एक एक पूर्वजों का नाम लेके एक एक की विशेषता देखो तो मजबूती आ जायेगी। मैं कभी भी न डिस्टर्ब हूँ, न मेरे से कोई डिस्टर्ब हो, कोई कहे आज मैं डिस्टर्ब हूँ तो यह किसने कहा! आपस में रूहानियत भरा ईश्वरीय स्नेह हो। हमारे पूर्वजों में यह एक खूबी थी, सभी रूहानियत और ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न रहे हैं।

यज्ञ की शुरुआत के दिनों में मोह छोड़ना, घर छोड़ना... कितना निश्चय था, कभी किसको ख्याल नहीं आया, क्या होगा? अभी तो सबको पता है मिसाल बन गये। जिन्होंने मोह छोड़ा वे खुद तो छूट गये, लेकिन जिन्हें को छोड़ा उनका भी भला हुआ है। भले ज्ञानी तू आत्मा नहीं बने हैं परन्तु कम-से-कम मेरे को कोई भी देखेगा तो कहेगा वाह! इतने समय से त्यागी तपस्वी रहे हैं। पहले है काम महान शत्रु, इसी के कारण लड़ाई झगड़ा हुआ। कराची में हमने कभी किसी को क्रोध करता हुआ नहीं देखा, क्रोध क्या होता है? मैं कभी-कभी कोई सीन इमर्ज करती हूँ।

आपस में सभी का इतना प्यार जैसे बिछड़ी हुई आत्मा बाबा से मिली है। तो बहुत प्यार पाया है और तपस्या में बाबा के सिवाए कोई था ही नहीं जो कुछ और याद आवे। कोई मिलने भी नहीं आ सकता था। कोई जबरदस्ती भी आता था, कहता था हमको मिलना है तो पूरी इन्क्वायरी के बाद ही जरूरी है तो मिलाते थे।

कई हैं जिनमें भले क्रोध, लोभ नहीं था, पर मोह था तो जिनका थोड़ा भी मोह रहा, उनका बड़ा नुकसान मोह ने किया होगा, इस मोह को खत्म करने के लिए देही-अभिमानि स्थिति बनाने की तपस्या करनी पड़ेगी। देही-अभिमानि स्थिति न होने कारण मोह या लोभ का भूत पकड़के बैठा है। वे अपना दोष नहीं महसूस करते हैं औरों को दोष देते हैं, फलाना ऐसे है... झूठ। मोह मेरे को पकड़के बैठा है या अभिमान, जो मैं करूँ मेरा नाम होवे, यह बड़ा खतरनाक है, इसलिए मंजिल है ऊंची, जाना है पार, जाने की भी एक कला है। जैसे सबका गुण देखने की कला है। बाबा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कैसे बना? हम भी बन सकते हैं। सबका भला करने की कला, जिसमें जो कमी है शुभ भावना से उसे ठीक कर देना, यह भी कला है। 16 कला सम्पूर्ण बनना है तो कोई एक कला भी कम न हो। जैसे बाबा कल्याणकारी है, हम भी विश्व-कल्याणकारी बनें, यह बाबा की भावना है।

पहले बने चात्रक, चात्रक बूँद को मोती बना देता, अब बने हैं चुम्बक। सुई की जंक उतरी हुई हो तो चुम्बक खींचता है। जंक का कारण होता है कुसंग, संग अच्छा नहीं है तो जंक अन्दर से जाती नहीं है। बाबा अभी अव्यक्त हो करके सारा दिन कितनी मेहनत करता है, कितना प्यार कर रहा है, कितना अच्छा वायुमण्डल बना करके निश्चित रहना, निश्चित भावी पर अडोल रहना सिखा रहा है। निश्चित वो रहता है, जो निश्चय बुद्धि है। अच्छा - ओम शान्ति।

“भगवान हमारी परवरिश कर रहा है, वह मेरा हो गया इसी खुशी और नशे में रहे”

(दादी गुल्जार)

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहे। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशानसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओ नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं, खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरू से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुँच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखायी दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। भगवान के साथ रहने वालों का गायन है। बाबा के साथ हमारा पार्ट है। बाबा सवेरे-सवेरे उठाता है। हरेक के दिल से निकलता है मेरा बाबा। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूंगा! संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। भले कामकाज करते हैं लेकिन नशा क्या रहता है भगवान मेरा हो गया। स्वप्न में भी नहीं था कि इतने बड़े बाबा के साथ जाकर रहेंगे। लोग भगवान के लिए क्या-क्या करते हैं लेकिन वह हमारा हो गया। वह हमारे लिए क्या क्या कर रहा है! बाबा मेरा है, ऐसे नहीं बहनों का ज्यादा है पहले मेरा है। अरे, जिसको इतना समय याद करते थे वह हमारा हो गया कितनी खुशी की बात है। अनुभव भी होता है वह मेरा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है।

हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। जिसे दुनिया पुकार रही है वह हमारा हो गया। हमारे दिल से क्या निकलता है - मेरा बाबा। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! यह भाग्य कम थोड़ेही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशानसीब की होगी। जब हम छोटे थे तो इतना नशा था, जो कहते थे जो हमारी शक्ल देखेगा खुश हो जायेगा क्योंकि हम भगवान के घर में रहते हैं। वह हमारा बाप है। बाबा का परिचय याद रहने से भी खुशी होती है। बातें तो संगठन में आयेगी क्योंकि संगठन में हम भी रहे हैं। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है, रिवाजी थोड़ेही हैं लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। सवेरे भगवान से गुडमार्निंग करते हैं, यह अपना भाग्य देख खुशी होती है। बाकी आपस में जो थोड़ी बहुत खिटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। पास होकर कहाँ जायेंगे? ब्रह्माबाबा के साथ सतयुग में। कहाँ थे, कहाँ पहुँच गये, इस अपने भाग्य की स्मृति रहती है? हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। वहाँ अगर दुनिया में होते तो बीमारियाँ आती। हमको बाबा ने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनाया है, बस यही गायन करते रहो। हमारे पर बाबा की नज़र पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है यह स्मृति में रखो। भगवान के घर में आये हैं, अगर यहाँ खुशी नहीं मिलेगी तो कहाँ मिलेगी! बाबा की पालना में पल रहे हो, यह भाग्य कम नहीं। आपके भाग्य को देख और भी खुश होते हैं, हरेक को यहाँ रहने का चांस नहीं है। दुनिया भगवान के लिए तड़फती है और आप उसके साथ रहते हो। ड्रामा ने और बाबा ने मंजूर किया है जो आपको यहाँ रहने का भाग्य मिला। भागवत पढ़कर आँखों में आँसू आते हैं, वह आपका ही यादगार है जो भगवान के साथ रहते हो। सब बातें खत्म कर दिल में दिलाराम को बिठा लो। खुशी कभी नहीं गंवाना। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“लौकिक अलौकिक कार्य में मस्त रहो, मस्तराज वन जाओ तो रावण अपने ही पीठ कर लेगा”

1) एक बाप पर पूरा फेथ हो आप उनसे फेथफुल अर्थात् ईमानदार रहो। जो ईमानदार है नैचुरल उनका रिगार्ड होगा। डिसरिगार्ड तभी होता जब फेथफुल नहीं। जो बाबा ने मुझे आज्ञायें दी हैं उनको फुल पालन करना है। ऐसे नहीं दस में आठ पालन करूं, दो नहीं। बाबा की आज्ञाओं को सेन्ट परसेन्ट दिल में नोट करो फिर कोई भी सवाल नहीं रहेगा। सदा ओ.के. बन जायेंगे। अगर मेरी स्थिति महान नहीं तो मैंने बाबा का बनकर क्या पाया!

2) स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण आटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सबजेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता हूँ, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण आटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

3) दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कहे तुम्हें आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करना है। परन्तु बाबा ब्रह्मचर्य में रहने की सख्त श्रीमत देता, इसमें जरा भी छूट नहीं। जिस बात के लिए दुनिया एक तरफ, उसी बात को बाबा बिल्कुल स्ट्रांग करता। इस बात में रिचक भी रहमदिल नहीं, इसमें काल होकर रहो। संस्कारों पर धर्मराज होकर रहो। जितना अपने संस्कारों पर धर्मराज बनेंगे उतना धर्म के ऊपर राज्य करेंगे। संस्कारों में जरा भी निर्बलता आयेगी तो हीन हो जायेंगे। लौकिक अलौकिक कार्य में मस्त रहो। मस्तराम बन जाओ तो रावण आपेही पीठ कर लेगा। अगर सोचेंगे क्या करूं, संस्कार हैं... तो वह कमजोर बना देंगे। सोचना भी कमजोरी है। आप डोन्टकेयर हो जाओ। आयेंगे चले जायेंगे, हमें बलवान से बलवान बाबा मिला। उसने हमें सब बल दे दिये इसलिए निर्बलता की बातें सोचो ही नहीं। आप समझो हम धर्मराज के समान हैं। हम माया को मार भगाने वाले हैं।

4) हमें एक ही डर है सतगुरु की श्रीमत से खिलाफ कोई मनमत न हो। जहाँ मनमत आई वहाँ अवज्ञा हुई, श्रीमत को पालन करने के लिए सतगुरु को सदा सामने रखो। श्रीमत मिली है बच्चे अमृतवेले उठना है, अन्न की परहेज रखनी है, संगदोष में नहीं आना है। रोज़ पढ़ाई पढ़नी है... यह सब सतगुरु ने श्रीमत दी। एक कहावत है जिनके सिर पर तू स्वामी, सो दुख कैसा पावे। तो मुझे न कोई चिंता है, न दुख।

हम सब ऐसे खुशीनसीब हैं, इसी नशे और खुशी में सदा रहो। प्रवृत्ति में रहते वैलेन्स से चलो

1) राजयोगी अर्थात् तपस्वी कुमार कुमारी। इस समय हम सभी सम्पूर्ण बनने की तपस्या कर रहे हैं। जैसे ऋषि एकान्त में बैठ तपस्या करते वैसे हम कर्मयोगी, राजयोगी, प्रवृत्ति में रहते एक बाबा के याद की तपस्या करते, घर जाने की, विकर्माजीत बनने की तपस्या करते। हम सबका सूक्ष्म में पहला लक्ष्य है कि हम

तपस्वी कुमार कुमारी अर्थात् राजयोगी, राजयोगिनियां हैं।

2) हम सब बेहद के सन्यासी हैं। यह सारी दुनिया जैसे एक जंगल है। यह जंगल अब जलने वाला है और हम जंगल के बीच अपनी तपस्या कर रहे हैं - अपने बाप के साथ वापस घर जाने की, इसलिए हमें विकर्मों का बोझ समाप्त करना है। दिन रात, आंख खोलते बन्द करते यही बुद्धि में फिकरात है कि जितना-जितना हम याद करें उतना-उतना विकर्म विनाश हों। आत्मा पावन हो। सभी कर्मों का खाता चुक्तू हो तो हम घर जायें। यह है हमारा पहला-पहला अभ्यास अथवा पुरुषार्थ।

3) हमारी बुद्धि में जब यह रहता कि हम तपस्वी कुमार हैं तो अन्दर की जो यह भावना है कि हम गृहस्थी हैं, संसारी हैं, प्रवृत्ति वाले हैं, यह सब सूक्ष्म की भावनायें मिट जाती हैं। सदा यही चिन्तन में रहता कि हमें तो तपस्या करनी है। जितना-जितना यह बुद्धि में रहता उतना प्रवृत्ति में रहते प्रवृत्ति के बोझों से जो मन को भारी कर देता, उससे हल्के होते जाते हैं। ऐसे तपस्वी रहने से प्रवृत्ति की जो अनेक समस्यायें आती हैं, वह सहज ही हल हो जाती हैं क्योंकि बुद्धि में रहता यह तो पास्ट का बना हुआ खेल पूरा करना है। यह खेल समाप्त हो तो हम घर जायें। अब बुद्धि बदल गई। जितना जल्दी इस खेल को समाप्त करें, विस्तार को सार में लायें, जितना जल्दी अपने विस्तार को समेट लें, उतना जल्दी वतन में जायें। बुद्धि में है अब हमें उड़ना है, पहले था हमें इस दुनिया में रहना है, अब है कि उड़ना है। उड़ने का संकल्प आते ही निमित्त मुसाफिर समझते और अपना सब कुछ समेटने में लग जाते। बाबा कहते हैं बच्चे अब सब कुछ समेट लेना है। जितना समेट लो उतना हल्के होकर घर चलेंगे। इसलिए आप लोग जो यह सोचते कि हम गृहस्थी हैं, अब इस शब्द को बदल दो। गृहस्थी नहीं ट्रस्टी हो - इससे बोझ खत्म हो जायेगा।

4) बाबा ने कहा तुम सब सैम्पल हो। प्रवृत्ति में रहते पर वृत्ति में रहने वाले हो क्योंकि आपके ऊपर अनेक लफड़े हैं, दुनिया कई आंखों से आपको देखती है। पहला तो देखती कि कहाँ यह घरबार छोड़कर तो नहीं चले जाते। स्त्री को भी यह सूक्ष्म भय रहता। ऐसा मिसाल कई बार आता - स्त्री कहती बस इसको तो धुन लग गई है, सारा दिन योग में ही बैठा रहता, सेन्टर पर बैठा रहता, ऐसा तो नहीं यह मुझे छोड़ देगा। घर को छोड़ देगा। यह सूक्ष्म में भय रहता। इस भय के कारण एक दो को आगे बढ़ाने के बजाये अपनी-अपनी तरफ खँचने की कोशिश करते। हमारा पुरुषार्थ है एक दो को आगे बढ़ाना लेकिन इस एक भय के पीछे और अनेक भय पैदा हो जाते। बाबा ने कभी नहीं कहा कि तुम्हें घरबार छोड़ सन्यासी बन जाना है। लेकिन यह जरूर कहा है कि प्रवृत्ति में रहते निवृत्ति में रहो। उसके लिए यह ध्यान रखना होता

कि परमार्थ और व्यवहार दोनों का बैलेन्स रहे। प्रवृत्ति माना बैलेन्स। नीचे ऊपर हुआ तो समझो प्रवृत्ति राइट नहीं।

5) आप लोग व्यवहार में रहते, बहुत बड़ा संसार है। संसार में रहते असंसारी रहना – यह मेहनत आपको है। कुमार-कुमारियों को इसकी फिकरात नहीं। आपको उनके फिकरातें हैं। कोई गाली देगा कोई कुछ कहेगा, फिर आता है वैराग्य। यह सब क्या है? इससे तो छोड़कर चले जायें। बाबा कहते मैं जानता हूँ आपके आगे अनेक परेशानियाँ हैं। थोड़े समय के लिए इन सबको निभाना है। बाबा ने तुम्हें जो भी शक्तियाँ दी हैं, उनको साथ रखो तो परेशानियाँ समाप्त हो जायेंगी। परेशान न हो, स्वमान में रहो। अष्ट शक्तियाँ साथ रखो तो रांग राइट को परख सकेंगे। रावण का काम है शान्ति को अशान्ति में बदलना, हैरान करना। उसे कहो ए रावण तू अपने रावणपने को छोड़ दे, तो कभी छोड़ेगा नहीं। वह तो हैरान करेगा ही। परन्तु हमें अष्ट शक्तियों को पूरा-पूरा साथ रखना है।

6) कई माताओं में सहन करने की बहुत शक्ति होती। बच्चों की सब बातें समा लेती। समा लेगी सहन कर लेगी तो महिमा उनकी होगी। टक्कर खाने से खुद की स्थिति खराब होती। कर्म के बन्धन को योग से तोड़ना है न कि मुख की आवाज से। ज्ञान मार्ग में लोक-लाज को भी तोड़ना पड़ता है, ऐसे नहीं कि समाज क्या कहेगा? अगर लोक लाज में फंसेंगे, सिर पर चिन्ताओं की गठरी रखेंगे तो योग नहीं लग सकता। वही बातें योग में भी ठक-ठक करती रहेंगी। चिन्ता बनी रहेगी। चिन्ता ही चिन्ता है इसलिए प्रेम से, बाबा की याद में रहकर बाबा की प्रवृत्ति को चलाओ। जहाँ झगड़ा हो वहाँ शान्ति से नमस्कार...।

7) कभी भी ऐसा कोई न कहे कि यह तो सन्यासी है इसलिए तोड़ो नहीं, निभाओ। परन्तु जहाँ झगड़ा है वहाँ शान्ति से किनारा कर लो। कई प्रॉपटी के पीछे झगड़ते परन्तु ऐसा नहीं प्रापटी छोड़ दो, व्यवहार को छोड़ दो... नहीं। हां श्वास का कोई ठिकाना नहीं इसलिए जो भी है, जिसकी प्रॉपटी है, उसको बाकायदे लिखा-पढ़ी कर अपने सामने सब कुछ क्लीयर कर दो। ऐसा न हो-शरीर छूटे तो संकल्प चले पता नहीं क्या होगा। हरेक बात में पहले शिवबाबा का हिस्सा फिर सबका हिस्सा निकालो। धन, जमीन, जेवर सबका हिसाब-किताब कर लाइन क्लीयर रखो ताकि बुद्धि निरसंकल्प रहे। यह न हो कि हमने भविष्य के लिए तो बाबा के पास जमा ही नहीं किया। यह भी न हो कि बच्चों को कुछ नहीं दिया।

8) आपका फर्ज है बच्चों को पढ़ा लिखा कर बड़ा करना। फिर उन्हें दोनों रास्ते दिखाओ। जहाँ तक हो सके शुभ-भावना रखो। ज्ञान में चलाने की कोशिश करो। फिर जैसी उनकी इच्छा... इसमें आपका कोई पाप नहीं, जिसकी इच्छा है वह अपने पाप पुण्य का भागी है। यह बताना आपका काम है, जीवन का फैसला करना उनका काम है। बच्ची की जवाबदारी जरूर मां बाप के ऊपर है। उनको भी रास्ता दिखाना है। यह है मुक्ति में जाने का

रास्ता और यह है नर्क में जाने का रास्ता। अब कहाँ भी जाओ। राह दिखा दो, चिन्ता छोड़ दो। क्या करें, कैसे करें, इन चिन्ताओं की चिन्ता में न रहो। आपका काम है उनको उस एज तक पढ़ाना, उस कर्मबन्धन को निभाना – यह है ड्यूटी। फिर जैसी उनकी तकदीर।

9) जहाँ तक हो सके-जब दोनों ज्ञान में चलते हो तो हमेशा समझो हम दो नहीं लेकिन 10 हैं। योग का वातावरण जरूर बनाओ। 3 पैर पृथ्वी में आसन बिछाकर योग में जरूर बैठो, पीसफुल रहो। बाबा ने जो ट्रैफिक कन्ट्रोल का नियम बनाकर दिया है उसका जितना हो सके पालन करो। जो भी भोजन बने उसका नियम अनुसार बाबा को भोग जरूर लगाओ। अगर ज्वाइंट फैमिली है, भोजन का भोग नहीं लगा सकते तो फल का लगा दो। दो मिनट भी याद में बैठकर भोग लगाने से बच्चों में भी वह आदत पड़ेगी, वातावरण शुद्ध होगा।

10) अगर कोई रोज मुरली सुनने किसी कारण से नहीं जा सकते तो दिल में यह दृढ़ता अवश्य हो कि जब तक ज्ञान डान्स नहीं की है तब तक भोजन नहीं खाना है। मुरली जरूर पढ़नी है। मुरली कोई मैगजीन नहीं। ऐसे नहीं मैगजीन पढ़ ली, बस। ऐसे भी नहीं ब्राह्मणी से रूठा और कहे हमें मुरली अलग दो। लाचारी कारण हो, नहीं आ सकते तो मुरली ले जाओ। आप सबका हक है। अपने टाइम पर जरूर पढ़ो। इंटरनेशनल योग में भी अवश्य भाग लो। उस दिन का बहुत अच्छा प्रभाव रहता है।

11) बाबा की श्रीमत है बच्चे, तुम्हें किसी भी हालत में रोना नहीं है। एक है आंखों का रोना, दूसरा है मन का रोना। अब आंखों के रोने और मन के रोने को तलाक दो। क्या करूँ, कैसे करूँ... कुछ भी करो। यह क्वेश्चन तो है ही माया के। परन्तु बाबा ने बिन्दी दी है। तीन बिन्दी लगाओ। एक बिन्दी मैं आत्मा हूँ, दूसरी बिन्दी बाबा और तीसरी बिन्दी ड्रामा। यह तीन बिन्दू लगाने से उदासी खत्म। जब मन में आता यह ऐसा क्यों करता। ऐसा वैसा सोचा माना उदास हुआ। बाबा कहता बिन्दू लगा दो। बाबा की गृहस्थी अति विशाल है देखो तो अति बड़ी है, न देखो तो बिन्दू है। बाबा बैठा है इस एक शब्द से बिन्दू आ गई। न किसी की महिमा में ऊपर चढ़ो, न किसकी ग्लानी में नीचे गिरो। अपना स्लोगन है-निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, दुःख-सुख, ठण्डी-गर्मी... सबमें समान। एकरस स्थिति रहे उसके लिए सदैव एक से सर्व रसों का अनुभव करो। जब सब रस मेरे में भरे होंगे तो एकरस हो जायेंगे। मान-शान, पैसे की भूख, प्रापर्टी की भूख, इन सब आसक्तियों को छोड़ दो। योग में कभी भी मूँझो नहीं। सच्ची दिल से बुद्धि को बाबा में लगाओ, जितना हो सके अशरीरी बनने का अभ्यास करो। जितना संगम पर अपना सब कुछ सफल करो उतना फायदा है। रोज सवेरे-सवेरे उठकर अपने आपके गुण गाओ। वाह मेरा भाग्य! वाह बाबा! वाह ड्रामा! जब , ऐसे गुण गाना छोड़ देते तो रोना आता। सदा भाग्य विधाता और भाग्य के गुण गाते रहो तो हर्षित रहेंगे। अच्छा-ओम् शान्ति